अमर उजाला
लखनऊ
शनिवार, 21 अप्रैल 2018
राजधानी
वर्ष 10 | अंक 291 | पृष्ठ : 24+8=32
मूल्य : तीन रुपये
7 राज्य • 1 केंद्रशासित प्रदेश • 19 संस्करण
amarujala.com

उत्तर प्रदेश

याचिका ख़ारिज दाऊद की संपत्ति जब्त करने को सुप्रीम कोर्ट से भी मिली हरी झंडी...19

लखनऊ की सरजमीं..
जबान-ए-हाल से ये लखनऊ की खाक कहती है
मिटाया गर्दिश-ए-अफ्लाक ने जाह-ओ-हशम मेरा।
- चकबस्त ब्रिज नारायण

पांच रुपये की हवा में 40 किमी. चलती है ये बाइक

एसएमएस कॉलेज के निदेशक तकनीकी व वैज्ञानिक प्रो. भरत राज सिंह ने ऐसी बाइक बनाई है जो सामान्य हवा से चल सकती है। पांच रुपये में 350 पाउंड क्षमता का गैस सिलिंडर भर जाता है। कई प्रदर्शनी में अवॉर्ड जीत चुकी इस बाइक को दिसंबर 2017 में बीबीएयू में आयोजित इनोवेशन प्रदर्शनी में राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने भी सराहा था। इस प्रदर्शनी में एयर-ओ-बाइक को प्रथम पुरस्कार भी मिला। प्रो. सिंह का कहना है कि पंक्चर की दुकान से सिलिंडर में हवा भराकर सफर पूरा किया जा सकता है। इसका प्रोटोटाइप मॉडल तैयार हो चुका है। अब इसका कॉमर्शियल उपयोग शुरू कराने की तैयारी चल रही है। तैयार होने के बाद इस बाइक की कीमत करीब 85,000 रुपये आएगी।

कालका-बिंदादीन की ड्योढ़ी

...यूं बदली कथक के तीर्थ की सूरत

1856

यही वह साल था जब 11 फरवरी को अवध के आखिरी नवाब, नवाब वाजिद अली शाह ने गद्दी छोड़ी थी। 13 फरवरी 1847 से करीब नौ वर्षों का उनका शासन नवाबी कला के संरक्षण के लिए काफी लोकप्रिय रहा। उन्होंने खुद ठुमरियां लिखीं। गोलागंज के गुईन रोड स्थित घर नवाब ने प्रसिद्ध कथक नर्तकों कालका और बिंदादीन महाराज को दिया था। यही घर कालका-बिंदादीन ड्योढ़ी के नाम से लोकप्रिय हुआ। इससे इतने विख्यात कलाकारों का जुड़ाव रहा कि इसे कथक का तीर्थ कहना गलत न होगा। कालका महाराज के तीनों बेटों-अच्छन महाराज, लच्छू महाराज एवं शंभू महाराज ने भी काफी ख्याति अर्जित की। अच्छन महाराज के बेटे बिरजू महाराज विख्यात कथक नर्तक हैं। पर, इतने विख्यात कलाकारों की स्मृतियों से जुड़ा यह घर देखरेख के अभाव में खंडहर बन गया था।

बिरजू महाराज ने अपने पूर्वजों के इस स्थल को संरक्षित करने के प्रयास किए। लंबे समय से सरकार से मांग के बाद अंततः 2015 में इसके संरक्षण और संवर्धन को उत्तर प्रदेश आवास एवं विकास परिषद से कराने का निर्णय हुआ। 2016 में चार फरवरी को बिरजू महाराज के जन्मदिवस पर इसे संरक्षित कर लोकार्पित किया गया। भवन के आंगन की बाईं दीवार पर कुएं के पीछे भित्ति चित्र में कथक के विविध प्रसंगों को बहुत खूबसूरती से दर्शाया गया है। मुख्य सभागार और साथ के अन्य कमरों में कथक गुरुओं से जुड़ी वस्तुएं प्रदर्शित की गई हैं। इस प्रकार कथक का यह तीर्थ कथक के गुरुओं से जुड़ा महत्वपूर्ण संग्रहालय भी बन चुका है।

जनाब, यहां सैर नहीं की तो क्या घूमे...

जायके के साथ सैर-सपाटे के लिए भी अपने शहर में ढेरों स्पॉट्स हैं। लखनऊ के इतिहास की दास्तां बताने वाली धरोहरों के साथ ऐसे ठिकाने भी हैं जो दिनभर गुलजार रहते हैं। तमाम ठौर की सैर की यादें झरोखे में ऐसे बस जाती हैं कि भुलाए नहीं भूलतीं...।

01 कुकरैल पिकनिक स्पॉट की हरियाली देती सुकून

पुराने लखनऊ में मूसाबाग के अलावा शहरी कंक्रीट के जंगल के बीच लगभग पांच हजार से अधिक एकड़ में फैले कुकरैल के कुदरती जंगल में ईको टूरिज्म प्रवेश करते ही दिख जाता है। आंखों को सुकून देने वाली हरियाली की जो बेल्ट दिखनी शुरू होती है, वह जंगल में घुसते-घुसते और घनी होती चली जाती है। कुकरैल वन क्षेत्र को लखनऊ के लोग दशकों तक एक बड़े पिकनिक स्पॉट के रूप में जानते रहे।

खासियत

- शहर से दूर इस पिकनिक स्पॉट की पांच हजार एकड़ की विरासत भी अद्भुत है। यहां पेड़ों की सैकड़ों किस्मों के अलावा नैचुरल बर्ड साइट भी है। इसमें सैकड़ों किस्म की दुर्लभ प्रजातियों के पक्षियों की साइटिंग की जा सकती है। यही नहीं अपने आप में समृद्ध घड़ियाल-कछुआ पुनर्वास केंद्र का आकर्षण भी कुछ कम नहीं है।
- ट्रांसगोमती में 7-8 किमी की दूरी तय करते ही शहर के कोलाहल से दूर और परिंदों की चहचहाहट के बीच दिन बिताने को नेचर लवर्स के लिए यह सबसे उम्दा जगह है। वन विभाग भी यहां कभी मोबीवॉक, बर्ड वाचिंग जैसे इवेंट करवाता ही रहता है। इसे एक बेहतर शूटिंग हब के रूप में भी जाना जाता है।
- नवाबगंज पक्षी विहार शहर के बाहर पड़ता है। ऐसे में कुदरत के करीब एक कोने में नैचुरली जंगल के साथ फन जोन शहरियों की वीकएंड आउटिंग का एक अच्छा विकल्प है।

02 नाच-नचाएगी 'भूलभुलैया'

देश में कहने-सुनने में जितना झुमरी तलैया शब्द चर्चित है, उतना ही लखनऊ की 'भूलभुलैया' का क्रेज है। इस पर फिल्म तक बन चुकी है। गोमती किनारे हुसैनाबाद में यह ऐतिहासिक भूलभुलैया बड़ा इमामबाड़ा का ही हिस्सा है। यह ऐसा स्थान है जहां आप गाइड के साथ करीने से नहीं चले तो बस भटकते ही रहिए। 18वीं शताब्दी के आखिर में नवाबों के काल की यह इमारत इतनी खास है कि आज भी लखनऊ आने वाला पर्यटक यहां बिना घूमे नहीं जा सकता। भूलभुलैया की ता-जिंदगी भर की यादें लोग सहेज कर ले जाते हैं।

खासियत

- इसी परिसर में बेगम की बावली भी है, जहां गोमती से पानी आया करता था। यही नहीं मुख्य हॉल में सदियों पुरानी पहचानें अपने आप में अनोखी हैं।
- यहां विदेशी मेहमान सेल्फी लेते मिल ही जाएंगे। साथ ही यहां अक्सर फिल्म की शूटिंग और बड़े अभिनेता और अभिनेत्रियां नजर आ जाएंगी।

03 इतिहास जानना है तो रेजीडेंसी आइए

पुराने लोग सालों तक जिस बेलीगारद को देख शाम को उसके सामने से गुजरने में भी हिचकते रहे, आज वही रेजीडेंसी शहर की उस विरासत में शुमार है जहां घूमना 150 साल के इतिहास को जीने के बराबर है। कैसरबाग जाते समय शहीद स्मारक के सामने ये विशालकाय परिसर आज भी घूमते समय घड़ी की सुइयों को थाम देता है। चंद घंटों का समय लेकर आए शौकीन यहां सुबह से शाम तक कब बिता देते हैं, उन्हें पता नहीं चलता। भारतीय और विदेशी पर्यटक अलग-अलग टिकट रेट चुकाकर भले ही आते हैं, लेकिन जब जाते हैं कैमरे की सारी जगह भरकर।

खासियत

- 1857 के गदर की अनमोल निशानी अंग्रेज अफसरों के निवास के अलावा यहां अहसास होता है कि कैसे आजादी के दीवाने और अंग्रेजी फौज में आमना-सामना हुआ होगा।
- यहां तोप और बंदूक के गोलों के निशान गिनने शुरू किए तो दिन बीत जाता है। युवाओं के बीच ये सेल्फी पॉइंट से कम नहीं है। यहां फिल्मों की शूटिंग भी होती रहती है। शौकिया और कलात्मक फोटोग्राफी के दीवाने यहां अपनी तीसरी आंख के कमाल को बखूबी दिखाते हैं।